जन्मदिन पूजा

अथ यजमानमानीय (नवयज्ञोपवीतश्चधारयेत्) ॐ यज्ञोपवीतम् परमं पवित्रं, प्रजा-पतेर्यत-सहजं पुरुस्तात। आयुष्यं अग्र्यं प्रतिमुन्च शुभ्रं, यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः॥ यज्ञोपवितमऽसि यज्ञ्यस्यत्वा उपवीतेन उपनह्यामि॥ (आसनशोधनंकुर्यात्) पात्र में सात गांठों वाला नऽर्यवन रखकर तर्पण करना: ॐ अस्य श्री आसन शोधन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः। (विनियोगन्यासः) मेरुपृष्ठ ऋषिः नमः शिरसि (दोनों हाथों से सिर को स्पर्श करना) सुतलं छन्दसे नमः मुखे (मूँह को) कूर्मो देवताय नमः हृदि (हृदय को) आसन शोधने विनियोगाय नमः सर्वांगेषु (सारे शरीर को)॥ दर्भ के दो तिनके भूमि पर अपने आसन के रूप में छोड़ना: ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वता इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद्ध्रुवो राजा विशामसि॥ भूमि को तिलक, अर्घ और पुष्प लगाना: प्रीम पृथिव्यै आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः॥ पृथ्वी को नमस्कार करना: पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ स्वेष्टदेव को स्मरणपूर्वक नमस्कार करना: शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये। अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्रीगणाधिपतये नमः॥ कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्। सदा रमन्तं

हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि॥ गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुः साक्षात्महेश्वरः। गुरुरेव जगत्सर्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥ श्रीगुरवे नमः, परमगुरवे नमः, परमेष्ठिने गुरवे नमः, परमाचार्याय नमः, आद्यसिद्धेभ्यो नमः॥ न्यास करना: अ नाभौ (नाभिस्थान को हाथों से छूना) उ हृदि (हृदय को) म शिरसि (सिर को)। भूः पादयोः (पैरों को) भुवः हृदि (हृदय को) स्वः शिरसि (सिर को) भूरङ्गुष्ठाभ्यां नमः (अंगूठों को) भुवस्तर्जनीभ्यां नमः (पहली उँगली को) स्वर्मध्यमाभ्यां नमः (दूसरी उँगली को) महः अनामिकाभ्यां नमः (तीसरी उँगली को) जनः कनिष्ठिकाभ्यां नमः (आखिरी उँगली को) तपः सत्यं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (हाथों के दोनों तले और दोनों पीठ भी मिलाना) भूः पादयोः (पैरों को) भुवः जान्वोः (घुटनों को) स्वः गुह्ये (गुदा को) महः नाभौ (नाभी को) जनः हृदि (हृदय को) तपः कण्ठे (गले को) सत्यं शिरसि (सिर को)॥ भूः हृदयाय नमः (हृदय को) भुवः शिरसे स्वाहा (सिर को) स्वः शिखायै वषट् (शिखा को) महः कवाचाय हुं (बायाँ हाथ दाएँ कान के आगे और दायाँ हाथ बाएँ कान के आगे रखना) जनः नेत्राभ्यां वौषट् (आखों को) तपः सत्यमस्त्राय फट् (तीन चुटकी सिर के ईर्द-गिर्द मारना)॥ तत्सवितुरङ्गुष्ठाभ्यां नमः (अंगूठों को)। वरेण्यं तर्जनीभ्यां नमः (पहली उँगली को)। भर्गो देवस्य मध्यमाभ्यां नमः (दूसरी उँगली को)। धीमहि अनामिकाभ्यां नमः (तीसरी उँगली को)। धियो योनः

कनिष्ठिकाभ्यां नमः (आखिरी उँगली को)। **प्रचोदया-त्करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः** (हाथों के दोनों तले और दोनों पीठ भी मिलाना)। **तत्पादयोः** (पैरों को) **सवितुर्जान्वोः** (घुटनों को)॥ **वरेण्यं कट्यां** (कमर को) **भर्गो नाभौ** (नाभि को)॥ **देवस्य हृदये** (हृदय को)। **धीमहि कण्ठे** (गले को)॥ **धियो नासिकायां** (नासिकाओ को)। **यश्चक्षुषे** (आखों को)॥ **नः ललाटे** (माथे को)। **प्रचोदयाच्छिरसि** (सिर को)॥ **तत्सवितुर्हृदयाय नमः** (हृदय को)। **वरेण्यं शिरसे स्वाहा** (सिर को)॥ **भर्गो देवस्य शिखायै वषट्** (चोटी को)। **धीमहि कवचाय हुं** (बायाँ हाथ दाएँ कान के आगे और दायाँ हाथ बाएँ कान के आगे रखना)॥ **धियो योनः नेत्राभ्यां वौषट्** (नेत्रों को) **प्रचोदयादस्त्राय फट्** (सिर के ईर्द-गिर्द तीन चुटकियाँ मारना)॥ **आपः स्तनयोः** (स्तनों को)। **ज्योतिर्नेत्रयोः** (नेत्रों को)॥ **रसो मुखे** (मुख को)। **अमृतं ललाटे** (माथे को)। **ब्रह्मभूर्भुवः स्वरों शिरसि** (सिर को)॥ **तद्विष्णोः परमं पदं, हृदयाय नमः** (हृदय को) **सदा पश्यन्ति सूरयः, शिरसे स्वाहा** (सिर को) **दिवीव चक्षुराततम्, शिखायै वषट्** (चोटी को)। **तद्विप्रासो विपन्यवो, कवचाय हुँ** (बायाँ हाथ दाएँ कान के आगे और दायाँ हाथ बाएँ कान के आगे रखना) **जागृवांसः समिन्धते, नेत्राभ्यां वौषट्** (नेत्रों को) **विष्णोर्यत्परमं पदम्, अस्त्राय फट्** (सिर के इर्द-गिर्द ३ चुटकियाँ मारना) **(इत्यादिन्यासः)॥ (सर्वासु दिक्षु तिलान्विक्षपन्)** चारों ओर तिल फैंकना: **अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः। ये भूता**

विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया॥ (प्राणायामं कुर्यात्) ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यं ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योतीरसोमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्॥ स्वयं को पानी की छीटें देना: तीर्थे स्नेयं तीर्थमेव समानानां भवति मानः शंस्यो अरुरुषो धूर्तिः प्राणङ्मर्त्यस्य रक्षाणो ब्रह्मणस्पते॥ अनामिका उँगली में पवित्र धारण करना: वसोः पवित्रमसि शतधारं वसूनां पवित्रमसि सहस्रधारमयक्ष्मा वः प्रजया संसृजामि रायस्पोषेण बहुला भवन्ति (इति पवित्रधारणम्)॥ यजमान तथा घर के सभी सदस्यों को तिलक लगाना: मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः शत्रूणां बुद्धि नाशोस्तु मित्राणामुदयस्तव आयुर् आरोग्यम् ऐश्वर्यम् एतत् त्रितयम् अस्तु ते जीव-त्वं शरदः शतम्॥ स्वयं को तिलक, पुष्प और अर्घ लगाना: परमात्मने पुरुषोत्तमाय पञ्चभूतात्मकाय विश्वात्मने मन्त्रनाथाय आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै समालभनं गन्धो नमः। अर्घो नमः। पुष्पं नमः (इति स्वात्मने गन्धादि)॥ दिये को तिलक, अक्षत और फूल लगाना: स्वप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरा-पहः। प्रसीद मम गोविन्द दीपोयं परिकल्पितः। धूप को भी: वनस्पतिरसो दिव्यो गन्धाढ्यो गन्धवत्तमः। आधारः सर्वदेवानां धूपोयं परिकल्पितः॥ सूर्य देवता को न्यर्मालि के पात्र में:

नमो धर्मनिधानाय नमः स्वकृतसाक्षिणे। नमः प्रत्यक्षदेवाय भास्कराय नमो नमः॥ (अथार्घविष्टरजलेनसंकलपात्) अर्घ, विष्टर युक्त पानी से न्यर्माल के पात्र में संकल्प छोड़ना: यत्रास्ति माता न पिता न बन्धुर्भ्रातापि नोयत्र सुहृज्जनश्च। न ज्ञायते यत्र दिनं न रात्रिस्तत्रात्मदीपं शरणं प्रपद्ये॥ आत्मने नारायणाय आधारशक्त्यै दीपधूपसङ्कल्पात्सि-द्धिरस्तु दीपोनमः धूपोनमः॥ तत्सद्ब्रह्म अद्यतावत्तिथावद्य _मासस्य, _पक्षस्य तिथौ_, _वारान्वितायां महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतयेब्रह्मणेकलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपते नारायणाय अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तभ्यश्चिरजीविभ्यः प्रजापतिजन्मोत्सवदेवताभ्यः विष्णुपञ्चायतनदेवताभ्यः अभयङ्करीदेव्यै क्षेमङ्करीभवान्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय आत्मनो वाङ्गमनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं जन्मोत्सवपूजानिमित्तं दीपधूप-संकल्पसिद्धिरस्तु दीपोनमः धूपोनमः॥ तिल, अक्षत, पुष्प, पानी और विष्टर युक्त प्रणीतपात्र में तिलक और ३ मंत्रों से ३ फूल डालना: संव्वः सृजामि हृदयं संसृष्टं मनो अस्तु वः॥१॥ संसृष्टास्तन्वः सन्तु वः संसृष्टः प्राणो अस्तु

वः॥२॥ संय्या वः प्रियास्तन्वः संप्रिया हृदयानि वः। आत्मा वो अस्तु सं प्रियः संप्रियास्तन्वो मम॥३॥ प्रणीतपात्र का जल नर्व्यवन पर जीवदान के रूप में डालना: अश्विनोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव। मित्रावरुणयोः प्राणस्तौ ते प्राणन्दत्तां तेन जीव। बृहस्पतेः प्राणः स ते प्राणन्दत्तात्तेन जीव॥ (इति तिलाक्षतविष्टरयुतौ पुष्पत्रयंजलपात्रे क्षिस्वा, अश्विनोरिति देवस्य जीवादानं देयम्)॥ अ नाभावित्यादि (देवस्य देहवन् न्यासं कुर्यात्)। (अक्षतयुतौद्वदर्भेणदैवाज्ञा) अक्षत युक्त दर्भ के दो तिनके हाथ में रखकर देवताओं से पूजा की आज्ञा लेना: ॐभूः पुरुषमावाहयामि नमः। ॐभुवः०। ॐस्वः०। ॐ भूर्भुवःस्वः०॥३॥ ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात्॥३॥ ॐतत्सद्ब्रह्मऽद्यतावत्तिथावद्य _मासस्य _पक्षस्य तिथौ_, _वारान्वितायां महागणपतयेः कुमारस्य श्रियः सरस्वत्याः लक्ष्म्याः विश्वकर्मणः द्वार्देवतानां प्रजापतयेः ब्रह्मणः, कलशदेवतानां ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवतानां चातुर्वेदेश्वरस्य सानुचरस्य ऋतुपतेनारायणस्य अश्वत्थाम्न बल व्यासस्य हनुमतस्य कृपाचार्यस्य मार्कण्डेय परशुरामस्य सप्तभ्यश्चिरजीविभ्यः प्रजापतिजन्मोत्सव-देवतानां विष्णुपञ्चायतनदेवतानां अभयङ्करीदेव्याः क्षेमङ्करीभवान्याः सर्वशत्रुघातिन्याः इह राष्ट्राधिपतयेः

अमुकभैरवस्य आत्मनो वाङ्गमनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थं जन्मोत्सव पूजानिमित्तं अर्चाम्ऽहं करिष्ये, ॐ कुरुष्व॥ (तिलसर्षपयवान्विकीर्य) तिल, सर्षप और जव चारों तरफ फेंककर देवों को आसन के रूप में दर्भ के दो तिनके छोड़ना: सप्तजन्मोत्सवदेवतानां आसनं नमः॥ अक्षत समेत दर्भ के दो तिनके हाथ में रखकर देवों का आवाहन करना: अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तभ्यश्चिरजीविभ्यः प्रजापतिजन्मोत्सवदेवताभ्यः युष्मान्वः पूजयामि, ॐ पूजय॥ दर्भ के तिनके हाथ में ही रखकर, अक्षत कन्धों से फेंककर नए अक्षत हाथ में लेकर: सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वात्यतिष्ठत् दशांगुलम्। जन्मोत्सवदेवताः आवाहिष्यामि, ॐ आवाहय॥ फूल हाथ में लेकर: आवाहयाम्यमरवृन्द-नुताङ्गरियुग्मं लक्ष्मीपतिं भुवनकारणमप्रमेयम्। आद्यं सनातनतनुं प्रणवासनस्थं पूर्णेन्दुभास्करहुताशसहस्ररूपम्॥ भगवन् पुण्डरीकाक्ष भक्तानुग्रहकारक, अस्मत्दयानुरोधेन सन्निधानं कुरु प्रभो॥३॥ फिर नऽर्यवन पर डालना॥ चारों तरफ जव फैंककर, प्राणायाम कर, पात्र का पानी हाथ में लेकर वापिस उसी पात्र में डालना: पाद्यार्थमुदकं नमः। शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥ उस पात्र में लाय, तिलक, सर्वोषधी, विष्टर और पानी डालना: लाजाश्च कुङ्कुमं चैव

सर्वौषधिसमन्वितम्। दर्भाङ्कुरं जलं चैव पञ्चाङ्गं पाद्यलक्षणम्॥ भगवन्तः पाद्यंपाद्यं॥ फिर नऽर्यवन पर जलधारा डालना: **अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तभ्य्श्चिरजीवेभ्यः पाद्यं नमः॥ (पाद्यशेषं निवार्येत्)** पाद्य का शेष नऽर्यवन पर छोड़कर, इस पात्र में नया पानी लेकर, पात्र का पानी हाथ में लेकर वापिस पात्र में डालना: **पुनः शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥** अब इसी पात्र में पानी, दूध, विष्टर, घी, दही, अक्षत, जव तथा सर्षप डालना: **आपः क्षीरं कुशाग्राणि घृतं च दधि तण्डुलाः। यवाः सिद्धार्थकाश्चेति ह्यर्घयमष्टाङ्गमुच्यते।** भगवन्तः अर्घ्यमऽर्घ्यम्॥ फिर नऽर्यवन पर जलधारा डालना: **त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः। ततो विश्वं व्यक्रामत्साशनानशने अभि॥१॥ आपो हिष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते हनः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा चनः॥ अश्वत्थामन् बले व्यास हनुमन् कृपार्चाय मार्कण्डेय परशुराम सप्तचिरजीविनः इदं वोऽर्घ्यं नमः॥** साफ पानी से आचमन देना: **जन्मोत्सवदेवताभ्यः आचमनीयं नमः॥** दूध, जल आदि नऽर्यवन पर डालना: **तस्माद्विराडजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः। जन्मोत्सव-देवताभ्यः**

स्नानं नमः॥ पात्र में सारी उपलब्ध सामग्री का थोडा-थोडा भाग तथा दूध, दही, पानी आदि मिलाकर नर्व्यवन पर जलधारा डालना:

"पुरुषमेधाः पुरुषस्य नारायणस्यार्षम्" सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिं विश्वतो वृत्वाऽत्यतिष्ठदशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुषः एवेदं सर्व यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने-नातिरोहति॥२॥ एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि, त्रिपादस्यामृतं दिवि॥३॥ त्रिपादूर्ध्वं उदैत्पुरुषः पादोस्येहा-भवत्पुनः। ततो विश्वं विक्रामत्साशनानशने अभि॥४॥ तस्माद्विराडजायत विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥५॥ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत। वसन्तो अस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥६॥ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये॥७॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत: सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्यान्ग्राम्याश्च ये॥८॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत॥९॥ तस्तादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः॥१०॥ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्। मुखं किमस्य कौ बाहू का ऊरू पादा उच्येते॥११॥ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद्बहू

राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत॥१२॥ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत॥१३॥ नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीष्र्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकानकल्पयत्॥१४॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अब्धनन्पुरुषं पशुम्॥१५॥ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः॥१६॥ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्॥ जन्मोत्सवदेवताः स्नानं नमः॥ कटोरी आदि में नऽर्यवन के लिए फूलों का आसन बनाना: आसनाय नमः गरुडासनाय नमः पद्मासनाय नमः शतदलपद्मासनाय नमः सहस्रदलपद्मासनाय नमः। किमासनं ते गरुडासनाय किं भूषणं कौस्तुभ-भूषणाय। लक्ष्मीकलत्राय किमस्ति देयं वागीश किंते वचनीयमस्ति॥ नऽर्यवन को आसन पर रखना: उत्तिष्ठ भगवन् विष्णो उतिष्ठ कमलापते उत्तिष्ठ त्रिजगतनाथ त्रेलोकी मंगलं कुरु॥ नऽर्यवन को सात तिलक, अर्‌घ और फूल लगाना: अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय, सप्तचिरजीवेभ्यः समालभनं गन्धो नमः।

सप्तचिरजीवेभ्यः अर्घो नमः पुष्पं नमः॥ धूप से आरती करना, घंटा भी बजाना: धूरसि धूर्व धूर्वन्तं योस्मान्धूर्वति तं धूर्वय वयं धूर्वामस्तं च धूर्व। देवानामसि वह्नितमं सस्नितमं पप्रितमं मिष्टतमं देवहूतमं विष्णोः क्रमोऽस्याहृतमसि हविर्दानं दृहस्व माह्वान्मित्रस्यत्वा चक्षुषा प्रेक्ष उरु त्वा वाताय वसवस्त्वा धूपयन्तु गायत्रेण च्छन्दसाऽङ्गिरस्वत् रुद्रास्त्वा धूपयन्तु त्रैष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्। आदित्यास्त्वा धूपयन्तु जागतेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्। विश्वे त्वा देवा वैश्वानरा धूपयन्तु आनुष्टुभेन च्छन्दसाङ्गिरस्वत्, इन्द्रस्त्वा धूपयतु वरुणस्त्वा धूपयतु विष्णुस्त्वा धूपयतु। जन्मोत्सवदेताभ्यः धूपं परिकल्पयामि नमः॥ रत्नदीप और कपूर से भी आरती करना: तेजोसि शुक्रमसि ज्योतिरसि धामासि प्रियन्देवानामनाधृष्टं देवयजनं देवताभ्यस्त्वा देवताभ्यो गृह्णामि यज्ञेभ्यस्त्वा यज्ञियेभ्यो गृह्णामि। जन्मोत्सवदेताभ्यः रत्नदीपं कर्पूरं परिकल्पयामि नमः॥ फूल लेकर चामर करना: (विष्णोरजयस्तुति पठित्वा) जयतु जयतु देवो देवकीनन्दनोऽयं जयतु जयतु कृष्णो वृष्णी वंश-प्रदीप। जयतु जयतु मेघश्यामलः कोमलांगो जयतु जयतु पृथ्वी-भारनाशो मुकुन्दः॥ प्रणाम करना: उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा चोरसा वचसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः॥ पात्र में थोड़ा दूध, दही, नाबद, शहद आदि रखकर

नर्ऽर्यवन को नवीद रखना: **वासुदेवाय लक्ष्मीसहिताय नारायणाय जन्मोत्सवदेवताभ्यः मात्रामधुपर्कं चुरुं। ॐ नमो नैवेद्यम् निवेदयामि नमः॥** पात्र का पानी हाथ में लेकर, दक्षिणा, तिल सहित वापिस पात्र में डालना: **शन्नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये, शंय्योरभिस्रवन्तु नः॥** फिर यही पानी दक्षिणा सहित नर्ऽर्यवन पर डालना: **जन्मोत्सवदेवताभ्यः दक्षिणायैतिलहिरण्यरजतनिष्कर्णं ददानि। एता देवताः सदक्षिणा अनेन प्रीयन्तां प्रीताः सन्तु॥** दो फूल नर्ऽर्यवन पर चढ़ाना: **ॐ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः दिवीव चक्षुराततम्॥१॥ तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम्॥२॥ इत्येतान्सम्पूज्य॥**

अब नैवेद्य की थाली लाकर प्रऽप्युन करना: अमृतेशमुद्रयाऽमृतीकृत्य अमृतमस्तु अमृतायतां नैवेद्यं। सावित्राणि सावित्रस्य देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे। महागणपतये कुमाराय श्रियै सरस्वत्यै लक्ष्म्यै विश्वकर्मणे द्वार्देवताभ्यः प्रजापतये ब्रह्मणे कलशदेवताभ्यः ब्रह्मविष्णुमहेश्वरदेवताभ्यः चातुर्वेदेश्वराय सानुचराय ऋतुपतये नारायणाय 'मार्गशीर्षे' रुक्मिणीसहिताय कृष्णाय। श्रीसहिताय केशवाय॥१॥ 'पौषे' प्रियासहिताय अनन्ताय। वागीश्वरीसहिताय नारायणाय॥२॥ 'माघे' प्रीतिस० अच्युताय। कान्तास० माधवाय॥३॥ 'फाल्गुने' शक्तिस० चक्रिणे। क्रियास० गोविन्दाय॥४॥ 'चैत्रे' सिद्धिस० वैकुण्ठाय। मतिस० विष्णवे॥५॥ 'वैशाखे ' शोभास० जनार्दनाय। विभूतिस० मधुसूदनाय॥६॥ 'ज्येष्ठे' महिमास० उपेन्द्राय। इच्छास० त्रिविक्रमाय॥७॥ 'आषाढे' लक्ष्मीस० यज्ञपुरुषाय। धृतिस० वामनाय॥८॥ 'श्रावणे' कान्तिस० वासुदेवाय। रतिस० श्रीधराय॥९॥ 'भाद्रपदे' प्राप्तिस० हरये। मायास० हृषीकेशाय॥१०॥ 'आश्वियुजे' प्राकाम्यास० योगीश्वराय। घीस० पद्मनाभाय ॥११॥ ' कार्तिके' लघिमास० पुण्डरीकाक्षाय। गरिमास० दामोदराय॥१२॥ 'मलिम्लुचे' शक्तिस० योगीश्वराय। सत्यभामास० नरकारये। निष्कलास० महामार्तण्डाय॥१३॥ दुर्गायै

त्र्यम्बकाय वरुणाय यज्ञपुरुषाय अग्निष्वात्तादिभ्यः पितृगणयागदेवताभ्यः। भगवते वासुदेवाय सङ्कर्षणाय प्रद्युम्नाय अनिरुद्धाय सत्याय पुरुषाय अच्युताय माधवाय गोविन्दाय सहस्रनाम्ने विष्णवे लक्ष्मीसहिताय नारायणाय॥ भवायदेवाय शर्वायदेवाय रुद्रायदेवाय पशुपतयेदेवाय उग्रायदेवाय भीमायदेवाय महादेवाय ईशानायदेवाय ईश्वरायदेवाय उमासहितायशिवाय पार्वतीसहिताय परमेश्वराय। विनायकाय एकदन्ताय कृष्णपिङ्गलाय गजाननाय लम्बोदराय भालचन्द्राय हेरम्बाय आखुरथाय विघ्नेशाय विघ्नभक्ष्याय वल्लभासहिताय श्रीमहागणेशाय। क्लीं कां कुमाराय षण्मुखाय मयूरवाहनाय सेनाधिपतये कुमाराय। भगवते ह्रांह्रींसः सूर्याय सप्ताश्वाय अनश्वाय एकाश्वाय नीलाश्वाय प्रत्यक्षदेवाय परमार्थसाराय तेजोरूपाय प्रभासहिताय आदित्याय। भगवत्यै अमायै कामायै चार्वङ्ग्यै टङ्कधारिण्यै तारायै पार्वत्यै यक्षिण्यै श्रीशारिकाभगवत्यै श्रीशारदाभगवत्यै श्रीमहाराज्ञीभगवत्यै श्रीज्वालाभगवत्यै व्रीडाभगवत्यै वैखरीभगवत्यै वितस्ताभगवत्यै गङ्गाभगवत्यै यमुनाभगवत्यै कालिकाभगवत्यै सिद्धलक्ष्म्यै महालक्ष्म्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै सहस्रनाम्न्यै देव्यै भवान्यै। अभयङ्करीदेव्यै

क्षेमङ्करीभगवत्यै सर्वशत्रुघातिन्यै इह राष्ट्राधिपतये अमुकभैरवाय। इन्द्राय वज्रहस्ताय अग्नये शक्तिहस्ताय यमाय दण्डहस्ताय नैर्ऋतये खड्गहस्ताय वरुणाय पाशहस्ताय वायवे ध्वजहस्ताय कुबेराय गदाहस्ताय ईशानाय त्रिशूलहस्ताय ब्रह्मणे पद्महस्ताय विष्णवे चक्रहस्ताय अनन्तादिभ्योऽष्टाभ्यः कुलनागदेवताभ्यः (अनन्तवासुकितक्षककर्कोटक शङ्खपालकुलिकपद्ममहापद्मेभ्यः) अग्न्यादित्याभ्यां वरुणचन्द्रमोभ्यां कुमारभौमाभ्यां विष्णुबुधाभ्यां इन्द्राबृहस्पतिभ्यां सरस्वतीशुक्राभ्यां प्रजापतिशनैश्चराभ्यां गणपतिराहुभ्यां रुद्रकेतुभ्यां ब्रह्मवाभ्यां अनन्तागस्त्याभ्यां ब्रह्मणे कूर्माय ध्रुवाय अनन्ताय हरये लक्ष्म्यै कमलायै शिख्यादिभ्यः पञ्चचत्वारिंशद्वास्तोष्पतियागदेवताभ्यः ब्राह्म्यादिभ्यो मातृभ्यः गौर्यादिभ्यो मातृभ्यः ललितादिभ्यो मातृभ्यः दुर्गाक्षेत्रगणेश्वर-देवताभ्यः राकादे० त्रिकादे० सिनीवालीदे० यामीदे० रौद्रीदे० वारुणीदे० बार्हस्पत्यदे० ओंभूर्दे० ओंभुवोदे० ओस्वर्दे० ओभूर्भुवः स्वर्दे० अखण्डब्रह्माण्डयागदे० धूर्भ्यः उपधूर्भ्यः महागायत्र्यै सावित्र्यै सरस्वत्यै हेरकादिभ्यो वटुकादिभ्यः॥ उत्पन्नममृतं दिव्यं प्राक्क्षीरोदधिमन्थनात्। अन्नममृतरूपेण नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥ इष्ट देवता का ध्यान करना: तत्सद्ब्रह्माऽद्यतावत्तिथावद्यमुकमासस्या-

मुकपक्षस्य तिथावमुकायामात्मनो वाङ्मनः कायोपार्जितपापनिवारणार्थममुककर्मनिमित्तमोंनमो नैवेद्यं निवेदयामिनमः॥ मातृकाओं को बली 'चोट्ट' देना: या काचिद्योगिनी रौद्रा सौम्या घोरतरा परा। खेचरी भूचरी रामा तुष्टा भवन्तु मे सदा। आकाशमातृभ्योऽन्नं नमः आकाशमातृभ्यः समालभनं गन्धो नमः अर्घो नमः पुष्पं नमः॥ इष्ट देवता का ध्यान करना: अमुकदेवाय पायसं मोदकान् पक्वान्नमऽपूकपान् वाऽन्नादि समर्पयामि नमः॥ क्षेत्रपालों की बली पर अक्षत और पानी छोड़ना: योऽस्मिन्निवसति क्षेत्रे क्षेत्रपालः सकिंकरः। तस्मै निवेदयाम्यद्य बलिं पानीयसंयुतम्। क्षांक्षेत्राधिपतयेऽन्नं नमः रांराष्ट्राधिपतयेऽन्नं नमः सर्वाभयवरप्रदो मयि पुष्टिं पुष्टिपतिर्दधातु॥ देवों को अक्षत, फूल चढ़ाना: आज्ञा मे दीयतां नाथ नैवेद्यस्यास्य भक्षणे। शरीरयात्रासिद्ध्यर्थं भगवन्क्षन्तुमर्हसि॥ आपन्नोऽस्मि शरण्योसि सर्वावस्थासु सर्वदा। भगवंस्त्वां प्रपन्नोस्मि रक्ष मां शरणागतमित्यादि (क्षमापुष्पाणि दत्त्वा)। उभाभ्यां जानुभ्यां पाणिभ्यां शिरसा वचसा चोरसा मनसा च नमस्कारं करोमि नमः॥ पवित्र निकालकर हाथ में नऽर्यवन बँधवाना: यदाबन्धन्दाक्षायणा हिरण्यं शतानीकाय सुमनस्यमानः। तन्म आबध्नामि शतशारदायाऽयुष्माञ्जरदष्टिर्यथासत्॥ रक्षस्व मे केशवः सविता सत्यधर्मा रक्षस्व मे केशवः प्राणधनानि यानि। रक्षस्व मे

केशवश्चोभयलोकवीरं शंनो भवतु मे द्विपदे शं चतुष्पदे॥ रक्षाणो ब्रह्मणस्पते॥ तर्पण करना: **नमो ब्रह्मणे नमो अस्त्वग्नये नमः पृथिव्यै नमः ओषधिभ्यः॥ नमो वाचे नमो वाचस्पतये नमो विष्णवे बृहते कृणोमि। इत्येतासामेव देवतानां सार्ष्टिं सायुज्यं सलोकतां सामीप्यमाप्नोति य एवं विद्वान्स्वाध्यायमधीते॥ इति नैवेद्यमन्त्रः॥**

अंत में सब न्यर्माल आदि किसी साफ जगह छोड़कर, दही चीनी का घोल हाथ में लेकर खाना: **(तिलगुडयुतं दधि पिबेत्) तत्र मन्त्रः॥ मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन। आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने॥१॥ चिरजीवी यथा त्वं भोः श्रिया रूपेण सम्पदा। युक्तस्तथा कुरु त्वं मां त्र्यायुषा संयुतं मुने॥२॥ इति॥**

अथ जन्मदिनपूज्याः षोडशोपचारैर्देवाः॥ "अश्वत्थाम्ने बलये व्यासाय हनुमते कृपाचार्याय मार्कण्डेयाय परशुरामाय सप्तभ्यश्चिरजीविभ्यः प्रजापतिजन्मोत्सवदेवताभ्यः" (इत्येतान्सम्पूज्य तिलगुडयुतं दधि पिबेत्)॥ तत्र मन्त्रः॥ मार्कण्डेय नमस्तेस्तु सप्तकल्पान्तजीवन। आयुरारोग्यसिद्ध्यर्थं प्रसीद भगवन्मुने॥१॥ चिरजीवी यथा त्वं भोः श्रिया रूपेण सम्पदा। युक्तस्तथा कुरु त्वं मां त्र्यायुषा संयुतं मुने॥२॥ इति॥

अथ चामरस्तुतिश्चविष्णु॥ ॐजय नारायण जय पुरुषोत्तम जय वामन कंसारे उद्धर मामसुरेशविनाशिन् पतितोहं संसारे। घोरं हर मम नरकरिपो केशव कल्मषभारं मामनुकम्पय दीनमनाथं कुरु भवसागरपारम्॥१॥ जय जय देव जयासुरसूदन जय केशव जय विष्णो जय लक्ष्मीमुखकमलमधुव्रत जय दशकन्धरजिष्णो। घोरं०॥२॥ त्वं जननी जनकः प्रभुरच्युत त्वं पुत्रसुहृद्धन-मित्रं त्वं शरणं शरणागतवत्सल त्वं भवजलधिवहित्रम्। घोरं०॥३॥ पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि गर्भनिवासं सोढुमलं पुनरस्मिन्माधव मामुद्धर निजदासम्। घोरं०॥४॥ जनकसुतापतिचरणपरायणशङ्कर-मुनिवरगीतं धारय मनसि कृष्ण पुरुषोत्तम वारय संसृतिभीतिम्। घोरं०॥५॥ यद्यपि सकलमहं कलयामि हरे नहि किमपि ससत्वं तदपि न मुञ्चति मामिदमच्युत पुत्रकलत्रममत्वम्। घोरं०॥६॥ इति विष्णोर्जयस्तुतिः॥